आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 10 अंक : 9 मई, 2023 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

पशुचिकित्सा एवं पशुपालन में राजस्थान प्रदेश के बढ़ते कदम

आप सभी को राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के 14वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। भारत जैसे प्राचीन सभ्यता और संस्कृति वाले देश में पशु–पक्षियों को देवता तुल्य माना जाता है। मूक व निरीह प्राणियों की सेवा को एक पवित्र कार्य माना जाता है। 20वीं पशुगणना में राजस्थान में 56.8 मिलियन पशु है, जो भारत के कुल पशुओं का 10.60 प्रतिशत है। राजस्थान में पशुपालन शुष्क व अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में कृषि की सहायक गतिविधि ही नहीं बल्कि आर्थिक उन्नति का मुख्य आधार है तथा गरीब परिवारों के लिए सतत् एवं स्थायी आजीविका का स्त्रोत है। राजस्थान में पशुपालन की महत्ता को देखते हुए तथा राज्य में पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के विकास के उद्देश्य से राज्य सरकार ने 18 मई, 2010 में राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर की स्थापना की गई। यह विश्वविद्यालय राज्य में पशुपालन को स्थिरता से बेहत्तर व लाभप्रदता में बदलने के लिए तकनीकी और वैज्ञानिक सहायता प्रदान करते हुए आगे बढ़ रहा है। इस विश्वविद्यालय ने अल्पकाल में ही राज्य ही नहीं अपितु पूरे देश में एक अलग स्थान बनाया है यहां के छात्र देश के ख्याति प्राप्त अन्य विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों में उच्च पदों पर कार्यरत है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान के प्रसार और अनुकूल राजकीय नीतिगत वातावरण के कारण आज राजस्थान दूध, मांस और ऊन उत्पादन में एक अग्रणी राज्य बन गया हैं यह विश्वविद्यालय राज्य के अधिकांश जिलों में पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालयों, डेयरी एवं खाद्य तकनीकी महाविद्यालयों, पशुधन अनुसंधान केन्द्रों एवं पशु विज्ञान केन्द्रों व ए.एच.डी.पी. संस्थानों के माध्यम से पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षण के साथ–साथ बेहत्तर पशुचिकित्सा रोग निदान व उपचार तथा प्रसार सेवाएं प्रदान कर पशु कल्याण व सामाजिक उत्थान का कार्य कर रहा है तथा राज्य को मानव संसाधन के रूप में उच्च शिक्षित पशुचिकित्सक भी उपलब्ध करवा रहा है। राज्य सरकार भी प्रदेश के पशुपालन क्षेत्र को सुदृढ़ बनाने में अहम् योगदान दे रही है। हाल ही में राज्य सरकार ने पशुपालन क्षेत्र को ओर अधिक सुदृढ़ी बनाने तथा पशुपालन सम्बन्धी उच्च शिक्षा के ढांचे के विस्तार तथा सुदृढ़ीकरण के लिए चार नवीन पशुचिकित्सा महाविद्यालय, एक पशु विज्ञान केन्द्र तथा एक नवीन वेटरनरी विश्वविद्यालय खोले जाने की घोषणा की गई जिसका किसानों एवं पशुपालकों को लाभ मिलेगा। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के 14वें स्थापना दिवस पर पशुपालकों एवं किसानों व अन्य सभी को पुनः शुभकामनाएं एवं बधाई।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

गोबर–गौमूत्र प्रसंस्करण पर किसान सम्मेलन का आयोजन

गोबर एवं गोमूत्र को भी आर्थिक उन्नति का आधार बनाएं : संभागीय आयुक्त नीरज के. पवन

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर एवं राजस्थान गौ सेवा परिषद्, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में गौमूत्र से कीटनाशक बनाने एवं इसके विपणन सम्बन्धी सम्भावनाओं के मद्देनजर एक दिवसीय किसान सम्मेलन 12 अप्रेल को रविन्द्र रंगमंच में आयोजित किया गया। किसान सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि नीरज के. पवन, संभागीय आयुक्त ने कहा कि गाय के दुग्ध के साथ–साथ गोबर एवं गोमूत्र को भी आर्थिक उन्नति का आधार बनाएं। गोबर एवं गौमूत्र को अपशिष्ट ना समझकर इसको प्रसंस्करण के माध्यम से खाद एवं कीटनाशक हेतु उपयोग में लाएं। जिले में किसान– पशुपालको को गोबर और गौमूत्र का प्रसंस्करण कार्य का प्रशिक्षण दिया गया है। अब इन प्रशिक्षार्णियों को क्रांति दूत बनकर गोबर–गोमूत्र प्रसंस्करण क्रांति की चेतना को घर–घर पहुंचाना है तभी इस सम्मेलन के उद्धेश्य की पूर्ति हो सकेगी। इस परियोजना के माध्यम से ना केवल गायो को निराश्रित छोड़ने की समस्या का समाधान होगा वरन् पशुपालको को गोबर–गोमूत्र से आर्थिक लाभ मिलेगा। संभागीय आयुक्त ने सम्मेलन में उपस्थित सभी किसानों और पशुपालकों को गोबर व गौमूत्र प्रसंस्करण को आगे बढाने की शपथ दिलाई। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि राजस्थान के देशी गोवंश की उत्पादन क्षमता बहुत अच्छी है। हमें पशुधन की उत्पादन क्षमता को देखते हुए इनके संरक्षण एवं संवर्द्धन के समुचित प्रयास जारी रखने होंगे। वर्तमान समय में किसानों में खाद की मांग बहुत बढ़ी है हमें रासायनिक खाद की जगह जैविक खाद के उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए इससे ना केवल गौवंश के उत्पादों का समुचित उपयोग होगा अपितु आम जन को भी रासायनिक दुष्प्रभावों से बचाया जा सकेगा। प्रो. ए.के. गहलोत, राष्ट्रीय समन्वयक, राजस्थान गौ सेवा परिषद् एवं पूर्व कुलपति, राजुवास ने बताया कि पशुपालकों के अथक प्रयासों से राजस्थान दुग्ध उत्पादन में देश में प्रथम स्थान पर है। यदि पशुपालक गोबर–गोमूत्र का उपयोग जैविक खेती हेतु करे तो पशुधन का राज्य के साथ–साथ देश की जी.डी.पी. में योगदान ओर बढ़ेगा। विशिष्ट अतिथि स्वामी संवित् विमर्शानन्द गिरी जी अधिष्ठाता शिवमठ, शिवबाडी, बीकानेर ने मनुष्य के जीवन में गौवंश के महत्व और उपादेयता पर अपने उद्बोधन में कहा कि गाय एक लघु जैव मण्डल है। जिसकी पूर्ण उपयोगिता को समझना सभी के लिए बहुत जरूरी हैं। गाय का गोबर एवं गोमूत्र मनुष्य के लिए वरदान स्वरूप है अतः इसके प्रसंस्करण को बढ़ावा देना चाहिए। हेम शर्मा, अध्यक्ष राजस्थान गौसेवा परिषद् ने गौसेवा परिषद् की कार्य योजना की विस्तृत जानकारी प्रदान की। सम्मेलन के नोड़ल अधिकारी प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास ने इस सम्मेलन के आयोजन का समन्वय किया एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।इस अवसर पर कृषि एवं पशुपालक विषय विषेशज्ञों के साथ किसानों का संवाद सत्र का आयोजन किया गया। उनकी समस्याओं एवं आशंकाओं का समाधन किया गया। इससे पूर्व किसान सम्मेलन के तकनीकी सत्र का आयोजन डॉ. लाल सिंह, अतिरिक्त निदेशक गोपालन विभाग, जयपुर के साथ–साथ सीताराम सोलंकी (राष्ट्रीय समन्वयक गोसेवा परिषद्, इन्दौर), डॉ. विरेन्द्र नेत्रा (सयुक्त निदेशक पशुपालन विभाग), डॉ. सुभाष चन्द (निदेशक प्रसार शिक्षा, एस.के.आर.ए.यू.), नोपाराम जाखड़ (अध्यक्ष उरमूल डेयरी), श्री कैलाश चौधरी (सयुक्त निदेशक कृषि), श्री गजेन्द्र सिंह सांखला, रिद्धकरण सेठिया, गजानन्द अग्रवाल, मुकेश गहलोत, नीलम गोयल, ने सम्बोधित किया। अतिथियों द्वारा "पशुपालक नये आयाम" पुस्तिका एवं "जैविक खेती एवं पशुपालन में केचुआ खाद का महत्व" विषय पर प्रकाशित फोल्डर का विमोचन किया गया। किसान सम्मेलन के दौरान वेटरनरी विश्वविद्यालय के साथ–साथ कृषि विभाग, पशुपालन विभाग, सी.एस.डब्लू.आर. आई., एन.आर.सी.सी., एस.के.आर.ए.यू., लोट्स डेयरी, राजस्थान ग्रामिण बैंक, खादबीज विपणन आदि संस्थाओं ने प्रदर्शनी का आयोजन किया। सम्मेलन के दौरान पूर्व महापौर नारायण चौपड़ा, मेघराज सेठिया, डॉ. तपेश माथुर, अरविन्द मिड्ढा सहित किसान–पशुपालक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

कुलपति का शिक्षकों एवं विद्यार्थियों से शैक्षणिक संवाद

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में 13 एवं 21 अप्रेल को छात्रों एवं शिक्षकों के साथ विभिन्न शैक्षणिक मुद्दो पर संवाद हेतु कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग के अध्यक्षता में मीटिंग का आयोजन किया गया। मीटिंग के दौरान कुलपति प्रो. गर्ग ने महाविद्यालय में अध्यनरत विद्यार्थियों की कक्षा में उपस्थिति, शैक्षणिक सत्र के अनुसार पाठ्यक्रम की समाप्ति, परीक्षा उपरान्त उत्तर पुस्तिकाओं का समय पर मूल्यांकन, विद्यार्थियों द्वारा शिक्षण सुधार हेतु फीडबैक एवं छात्र–छात्राओं को उपलब्ध होस्टल एवं खेलकूद सुविधाओं पर संवाद किया। कुलपति ने शैक्षणिक सुधार एवं विद्यार्थियों के लिए सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु कई महत्वपूर्ण सुझाव एवं दिशा निर्देश प्रदान किये। कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि विश्वविद्यालय में शैक्षणिक सुधार एवं उत्कृष्टता हमारा मुख्य उद्देश्य है। इसके लिए महाविद्यालय में सभी भौतिक सुविधाओं का विस्तार प्राथमिकता से किया जाएगा। बैठक के दौरान अधिष्ठाता, बीकानेर प्रो. ए.पी. सिंह, अधिष्ठाता पी.जी.आई.वी.ई. आर. प्रो. शीला चौधरी, परीक्षा नियंत्रक प्रो. उर्मिला पानू, निदेशक मानव संसाधन विकास प्रो. बी.एन. श्रृंगी, निदेशक पी.एम.ई. प्रो. बसंत बैस, प्रो. आर.के. नागदा, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. प्रवीण बिश्नोई, शिक्षक एवं विद्यार्थी मौजूद रहे।

कृषि विज्ञान केन्द्र नोहर में जिला स्तरीय मिलेट्स कृषक संगोष्ठी का आयोजन

नवनिर्मित किसान घर व कुक्कुट पालन इकाई का लोकार्पण

भूमि के गिरते जैविक कार्बन के स्तर पर ध्यान देने की जरूरत : माननीय सांसद राहुल कस्वां

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र, नोहर में 26 अप्रेल को जिलास्तरीय मिलेट्स संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर नवनिर्मित किसान घर व कुक्कुट पालन इकाई का लोकार्पण माननीय सांसद श्री राहुल कस्वां, लोकसभा क्षेत्र, चूरू, डॉ. जे.पी. मिश्रा, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद–अटारी जोधपुर, वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री अभिषेक मटोरिया, पूर्व विधायक (नोहर), प्रो. राजेश कुमार धूडिया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास उपस्थित रहे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री राहुल कस्वां ने अपने उदबोधन में बताया कि वर्ष–2023 को विश्व स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इसका प्रस्ताव भारत ने दिया था और संयुक्त राष्ट्र महासभा ने इसका अनुमोदन किया था। इसलिए भारत सरकार मोटे अनाजों के उत्पादन और उपभोग को प्रोत्साहन देने के लिए सतत प्रयास कर रही हैं। जलवायु परिवर्तन से प्रभावित गेहूँ और धान की खेती ने भी मोटे अनाजों के उत्पादन और उपभोग को एक बेहतर विकल्प बनाया है। उन्होंने प्राकृतिक खेती की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए लोगों से आग्रह किया कि वह अधिक से अधिक प्राकृतिक खेती को अपनाकर खेती में रसायनों के प्रयोग को कम करें ताकि जीरो बजट प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने भूमि के गिरते जैविक कार्बन के स्तर पर भी ध्यान आकर्षित किया करते हुए किसानों से आग्रह किया कि भूमि के स्वास्थ्य को बरकरार रखने के लिए जैविक कार्बन बहुत जरूरी है इसलिए भूमि में अधिक से अधिक जैविक खादों के उपयोग की ओर ध्यान देने की जरुरत हैं। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि राजस्थान में बड़ी संख्या में किसान पशुपालन व्यवसाय से जुड़े हुए हैं इसलिए आय के लिए वे दुग्ध उत्पादन पर काफी ज्यादा निर्भर हैं। हालांकि, इस साल लंपी वायरस जैसी बीमारियों के चलते पशुपालकों को भारी नुकसान भी हुआ। इन विपरीत परिस्थितियों होने के बावजूद भी प्रदेश ने दुग्ध उत्पादन में अग्रणी स्थान प्राप्त किया है। उन्होंने किसानो को कृषि के साथ–साथ पशुपालन को व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. जे.पी. मिश्रा ने अपने उदबोधन में कहा कि प्राकृतिक कृषि को आधुनिक तकनीक से जोड़कर वैज्ञानिक तरीको की मदद से उन्नत खेती व उन्नत पशुपालन के जरिये ही खुशहाल किसान, खुशहाल देश के सपने को साकार किया जा सकता हैं। किसानों को नवाचार अपनाते हुए एकीकृत कृषि प्रणाली जिसमें कृषि के साथ–साथ अन्य उद्यम जैसे मशरूम, मधुमक्खी, मशरूम, बागवानी, सब्जी उत्पादन, नकदी फसल, चारा फसल, पशुपालन, मुर्गी–पालन व मत्सय पालन को शामिल करके कृषि में जोखिम को कम करने व लाभदायक व्यवसाय बनाने की सलाह दी। अभिषेक मटोरिया, पूर्व विधायक (नोहर) ने भी किसानों को सम्बोधित किया। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने अतिथियों का स्वागत कर पशुपालकों व किसानों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने केन्द्र, विश्वविद्यालय की गतिविधियों, वर्तमान परिवेश में जैविक कृषि व पशुपालन के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र, नोहर के द्वारा तैयार बैकयार्ड मुर्गी पालन, जीरो बजट प्राकृतिक खेती एवं काचरी की उन्नत खेती फोल्डर का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर क्षेत्र के प्रगतिशील किसानों के द्वारा प्रदर्शनी भी लगाई गई तथा पशुपालकों को चारा उत्पादन हेतु बीज वितरण किया गया। कार्यक्रम के दौरान श्री अमर सिंह पूनिया, पूर्व प्रधान (नोहर), श्री दीपचंद बेनीवाल, जिला परिषद सदस्य, प्रो. कुलदीप नेहरा, प्रभारी अधिकारी, पशुधन अनुसंधान केंद्र, नोहर डॉ. सुरेश चंद कांटवा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केंद्र, नोहर, डॉ. आर.के. शिवरान, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष कृषि विज्ञान केंद्र, चांदगोठी, चूरू, डॉ. अनूप कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केंद्र, संगरिया, श्री बलवीर खाती, पूर्व उपनिदेशक आत्मा, हनुमानगढ़ इत्यादि उपस्थित रहे।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

गाढवाला में समेकित बाल विकास पर हुआ संगोष्ठी कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए गांव गाढवाला के आंगनवाड़ी केंद्र पर महिला एवं बालिका विकास विभाग, बीकानेर के सहयोग से 27 अप्रेल को संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के दौरान केंद्र की सहायिका निर्मला देवी ने केंद्र द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियां तथा महिला एवं बाल विकास के लिए राजस्थान सरकार की विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया। इस अवसर पर यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के समन्वयक डॉ नीरज कुमार शर्मा ने ग्रामीण महिलाओं को स्वच्छता, गर्भवती महिलाओं एवं शिशुओं के टीकाकरण, कृमि नाशन तथा पोषण सम्बंधित विभिन्न विषयों पर जागरूक किया। पशु चिकित्सा प्रसार शिक्षा विभाग के स्नातकोत्तर छात्र विश्वास कुमार और सनी पंकज का सहयोग रहा।

प्रो. धूड़िया दुर्ग (छत्तीसगढ़) में डूल्स-पेट-न्यूट्रीशन अवार्ड से सम्मानित

इण्डियन सोसाइटी फॉर एडवांसमेंट ऑफ केनाइन प्रैक्टिस द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रो. आर.के. धूड़िया को डूल्स–पेट–न्यूट्रीशन अवार्ड से नवाजा गया। प्रो. धूड़िया को दाऊ श्री वासुदेव चन्द्रकार कामधेनू विश्वविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़ में इण्डियन सोसाइटी फॉर एड़वासमेंट ऑफ केनाइन प्रेक्टिस के "श्वानों के नेदानिक, चिकित्सकीय और पोषण प्रबन्धन में नवीन प्रगति" विषय पर 20–22 अप्रेल, 2023 को आयोजित 19वें वार्षिक सम्मेलन एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान पशुपोषण के क्षैत्र में किये गए विशेष कार्यों के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया।

विश्व पशुचिकित्सा दिवस का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के तीनों संगठक महाविद्यालयों एवं सभी इकाईयों में 29 अप्रेल को विश्व पशुचिकित्सा के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। माननीय कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने भी भारतीय पशुचिकित्सा परिषद्, नई दिल्ली द्वारा विज्ञान भवन में आयोजित समारोह में शिरकत की। विश्व पशु चिकित्सा दिवस इस वर्ष "पशुचिकित्सा पेशे में विविधता, समानता और समावेशिता को बढ़ावा देना" विषय पर मनाया गया। इस अवसर पर वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं इण्डियन रेड क्रॉस सोसाइटी, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, पूर्व निदेशक क्लिनिक डॉ. आर.के. तंवर ने "पशुचिकित्सा पेशे में विविधता, समानता एवं समावेशित को बढ़ावा देने" विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। इण्डियन रेड़ क्रोस सोसाइटी, बीकानेर के उपाध्यक्ष डॉ. तनवीर मालावत ने "एकल स्वास्थ्य" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. गोपेश नाग, कमाण्डेट, बी.एस.एफ. जोधपुर ने देश की रक्षा में पशुओं का एवं पशुचिकित्सकों के योगदान को प्रजेटेशन के माध्यम से बताया। इण्डियन रेड़ क्रोस सोसाइटी, बीकानेर के सचिव विजय खत्री ने भी इस अवसर पर सम्बोधित किया। इससे पहले अधिष्ठाता प्रो. ए. पी. सिंह सभी का स्वागत किया और सभी को विश्व पशुचिकित्सा दिवस की बधाई देते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने का आग्रह किया। विश्व पशुचिकित्सा दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों हेतु चित्रकला, निबन्ध–लेखन एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–मई, 2023

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
बबेसिओसिस	गाय	–	–	–	सीकर, बीकानेर, चूरू, जालोर जोधपुर
लंगडा बुखार	गाय, भैंस	उदयपुर	धौलपुर	टोंक	भरतपुर, झालावाड़, राजसमन्द, नागौर, सीकर
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	–	अलवर, बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, जयपुर, झालावाड़, सवाई माधोपुर, उदयपुर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	–	–	जैसलमेर	–
खुरपका मुहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	अलवर	राजसमन्द	–	अजमेर, बाड़मेर, भरतपुर, बीकानेर, चूरू, दौसा, जालोर, जोधपुर, करौली, सिरोही, टोंक
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	धोलपुर, प्रतापगढ़	–	–	अजमेर, बारां, बाड़मेर, भीलवाड़ा, राजसमन्द, कोटा, बीकानेर
पी.पी.आर.	बकरी	बारां	–	नागौर, राजसमन्द	अजमेर, अलवर, बांसवाड़ा, भरतपुर, भीलवाड़ा, चूरू, दौसा, धौलपुर, डूंगरपुर, गंगानगर, जयपुर, जालोर, जोधपुर, कोटा, सवाई माधोपुर, सिरोही
स्वाइन फीवर	सूकर	राजसमन्द	–	–	–
थीलेरिओसिस	गाय	–	–	–	बॉसवाड़ा
बोचुलिज्म	गौवंश	–	–	–	जैसलमेर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. ए.पी. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं डॉ. जे.पी. कछावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 15, 19, 20, 21, 25 एवं 26 अप्रेल को गांव जलेउ, ढाणी मुनीमजी, सोमासी, गजासर, खारिया एवं मेगसर गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 144 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 4, 6, 12 एवं 13 अप्रेल को सांवराद, बाकलिया, दुजार एवं आसोटा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 70 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 13 एवं 21 अप्रेल को गांव भवानीपुरा एवं डिग्गी में तथा 5, 18 एवं 25 अप्रेल को आयोजित आनॅलाईन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 117 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 4, 15, 24 एवं 25 अप्रेल को गांव पूठपुरा, कोडपुरा, गोगली एवं बैसाख गांवों में आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में कुल 118 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 6, 10, 15, 21 एवं 25 अप्रेल को गांव माताजी का भीमपुरा, नयागांव, रामनगर, रोझड़ी तथा कंवरपुरा में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 129 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) द्वारा 5, 12, 20 एवं 28 अप्रेल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 149 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 17 एवं 21 अप्रेल को गांव सीकवाड़ा एवं डोरडा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 108 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 13 एवं 15 अप्रेल को ऑनलाइन तथा 27 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 97 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 10, 12, 15, 17, 19 एवं 24 अप्रेल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 150 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 12, 15, 18, 20 24 28 एवं 29 अप्रेल को गांव हिंगोनिया, लालपुरा, पचार, नयाबास, रामकुई, श्योसिंहपुरा एवं खोरा बिसल गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 131 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 13, 18, 20 एवं 26 अप्रेल को गांव बैलारा कलां, बरताई, क्वार्दिया एवं बैलारा खुर्द में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 77 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 12, 17 एवं 21 अप्रेल को एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर तथा दिनांक 29 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 160 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा दिनांक 5, 6, 12, 13 एवं 15 अप्रेल को गांव रामसरा, 25 एनटीआर, थालडका, 22 एनटीआर एवं मंदरपुरा गांवों में एक दिवसीय कृषक पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 130. किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

गर्मी में पशुओं में निर्जलीकरण से बचाव

वातावरण के तापमान में बढ़ोतरी के साथ ही पशुओं के शरीर में पानी की आवश्यकता भी बढ़ती है। पारा बढ़ने का सीधा असर दुधारू पशुओं की सेहत पर पड़ता है। अधिक गर्मी की वजह से पशुओं में निर्जलीकरण की समस्या पैदा हो जाती है और इस वजह से पशुओं का खाना–पीना भी कम हो जाता है तथा पशुओं का दूध लगातार कम हो जाता है।

जल की आवश्यकता को प्रभावित करने वाले कारक: पशुओं को एक किलोग्राम चारे के साथ 3–4 कि.ग्रा पानी की आवश्यकता होती है, परन्तु यदि आहार में प्रोटीन तथा खनिज लवणों की मात्रा ज्यादा हो तो जल की आवश्यकता बढ़ जाती है, क्योंकि मूत्र के रूप में जल का ह्रास अधिक होता हैं।

पशुओं में जल की कमी से होने वाली हानियां: जल की कमी से पशुओं में चारा खाने व पचाने की क्षमता घट जाती है तथा पचे हुए पोषक तत्वों का शरीर में ठीक तरह से उपयोग नहीं होता है तथा उसके साथ ही शरीर में मौजूद आवश्यक तत्व भी मल–मूत्र के साथ निकलने लगते हैं उसकी वजह से पशुओं की दुग्ध उत्पादन तथा प्रजनन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अधिक समय तक निर्जलीकरण रहने से पशु का खून गाढ़ा हो जाता है। बछड़े–बछड़ियों में कम उम्र में यदि निर्जलीकरण की समस्या होती है तो उस वजह से पेचिस हो जाता है तथा मृत्यु भी हो सकती है। गर्मी में पशुओं में दस्त लगने की भी समस्या रहती है।

पशुओं में निर्जलीकरण के लक्षण: शरीर में पानी की कमी हो जाती है। भूख न लगना, पशु का सुस्त व कमजोर हो जाना, पेशाब गाढ़ा आना, वजन कम हो जाना, श्लेष्मा झिल्ली और आंखों का सूखना, दुग्ध उत्पादन गिर जाना, सूखी व खुरदरी चमड़ी होना, दुधारू गायों में निर्जलीकरण के परिणाम स्वरूप दुग्ध उत्पादन लगभग समाप्त हो जाता है जिससे पशुपालक को काफी आर्थिक हानि उठानी पड़ती है।

पशुपालकों के द्वारा रखी जाने वाली सावधानियां:

- ❖ पशुओं को बार–बार पानी पिलाते रहें तथा शरीर पर भी पानी का छिड़काव करते रहें।
- ❖ पशु को सूखी तुड़ी 30 प्रतिशत और 70 प्रतिशत हरा चारा खिलायें।
- ❖ ताजा तूड़ी खिलाने से पहले उसे शाम के समय भिगोकर रखें ।
- ❖ पशु के ठान में हमेशा नमक की ईंट रखें जिसको चाटने पर भी पशु को पानी पीने की क्षमता बढ़ती है।
- ❖ पशुओं को सुबह–शाम नहलायें।
- ❖ पशुओं को बाड़े में जहां बांधे वहां आसपास पानी का छिड़काव करें।

निदान: पशु में निर्जलीकरण को जांचने के लिए पशु की चमड़ी उठाकर देखें, चमड़ी को छोड़ने पर अगर एक सैकेण्ड में चमड़ी वापस अपनी सामान्य स्थिति में न आयें तो यह पशु में निर्जलीकरण को दर्शाता है। इसके अलावा विभिन्न लक्षणों को देखकर भी पशु में निर्जलीकरण का पता लगाया जा सकता है।

बचाव: निर्जलीकरण से बचाव के लिए पशु को कम से कम तीन बार पानी पिलाना चाहिए। पशुओं को पिलाने वाला पानी साफ एवं स्वच्छ होना चाहिए। दस्त होने पर पशु को तुरन्त पशुचिकित्सालय ले जाकर नाड़ी के माध्यम से पर्याप्त मात्रा में नार्मल सैलाइन एवं इलेक्ट्रोलाइट्स लगवायें जिससे पानी की कमी को पूरा किया जा सके। पशुओं को गर्मी से बचाना चाहिए जिससे कि पशुपालक को अधिक गर्मी में आर्थिक हानि न उठानी पड़े व पशु स्वस्थ रहें।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

पशुपालन को व्यवसाय के रूप में अपनाकर आर्थिक स्थिति को किया सुदृढ़

हनुमान दास स्वामी बीकानेर जिले की लूनकरणसर तहसील के प्रगतिशील एवं जागरूक पशुपालक ने कृषि एवं पशुपालन का उचित सामंजस्य बनाकर पशुपालन को व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी सामाजिक व आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना चुके हैं। वर्तमान में इनके पास 28 बीघा सिंचित खेती की जमीन है। पांच वर्ष पूर्व इन्होंने दो गायों से पशुपालन का काम शुरू किया था। वर्तमान में इनके पास कुल 25 पशु हैं जिनमें दो भैंसे एवं 23 गायें हैं, जिससे वर्तमान में ये 200 लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादित करते हैं। यह दूध के अलावा दुग्ध उत्पाद जैसे पनीर, घी आदि का उत्पादन कर विक्रय करते हैं। हनुमान दास निरंतर पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर से सम्पर्क में रहते हुए कृमिनाशक दवा का उचित उपयोग, संतुलित पशु आहार, पशुओं का वैज्ञानिक प्रबंधन, अजोला घास तकनीक आदि विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त करते रहते हैं। इन्होंने पशु विज्ञान केन्द्र लूनकरणसर के सम्पर्क में आकर गोबर से वर्मीकम्पोस्ट (केचुआ खाद) बनाना सीखकर इन्होंने स्वयं वर्मीकम्पोस्ट तैयार किया और अपने खेतों में उपयोग करके अन्य खाद की निर्भरता को कम किया। इसके अलावा इन्होंने पशुओं के लिये नेपियर घास एवं अजोला घास भी लगा रखी है और अपने पशुओं को अजोला व नेपियर घास भी खिलाते हैं। हनुमान दास एक सफल डेयरी व्यवसायी के साथ–साथ अपने आस–पास के क्षेत्र के गांवों में भी लोगों से अपनी अलग पहचान बना ली है। वर्तमान में हनुमान दास पशुपालन से 1,50,000 रूपये प्रतिमाह आय प्राप्त कर रहे हैं। वे अपनी सफलता का श्रेय स्वयं की कड़ी मेहनत और पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर के वैज्ञानिकों को देते हैं।

सम्पर्क– हनुमान दास स्वामी
चक 232 गौपलयान, लूनकरणसर जिला बीकानेर (मो.9001008682)

पशु चयन की दुग्ध उत्पादन वृद्धि में भूमिका

आधुनिक युग में कम्प्यूटर एवं इंटरनेट के बढ़ते हुए अनुप्रयोग ने पशुपालन एवं अन्य क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन लेकर आया है। आज का पशुपालक, पशुओं का ऑनलाइन क्रय–विक्रय कर स्वंय को लाभान्वित करता है एवं बिचौलों की ठगी का आसानी से शिकार नहीं होता है। स्थानीय स्तर पर अधिकांश पशुपालक दुधारू पशुओं की अच्छी नस्ल का उपयोग करके तथा प्रजनन की स्थानीय तकनीकें अपनाकर दुग्ध उद्योग में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में समर्थ हुए हैं किन्तु आज भी बड़ी संख्या में पशुपालक उच्च गुणवत्ता वाली पशु नस्लों की दुग्ध उत्पादन में भूमिका, अधिकतम दुग्ध उत्पादन हेतु नस्ल सुधार एवं पशु चयन के महत्व से अनभिज्ञ है। इसके लिए आवश्यकता है कि उन्हें चयन और प्रजनन के बारे में उचित जानकारी प्राप्त हो। आजकल सरकार पशुपालकों की आय को दुगुना करने के लिए कई तरह की सब्सिडी प्रदान कर रही है किन्तु सब्सिडी तब तक सफल नहीं है जब तक पशुपालकों को नस्ल और उचित प्रजनन तकनीक के बारे में सही और उचित जानकारी प्राप्त न हो। किसी भी प्रजनन नीति के सफल होने के लिए दो बातें महत्वपूर्ण है, पहली चयन और दूसरी प्रजनन विधि। चयन सहज रूप से स्थानीय स्तर पर या कृत्रिम रूप से किया जा सकता है। यह पशुपालक की आवश्यकता पर निर्भर करता है कि उसे किस प्रकार अपने पशु को प्रजनन कराना है। सामान्यतः पशुपालक बिना नर पशु की उचित जानकारी के बिना सोचे समझे किसी भी आवारा या अवर्णित पशु द्वारा अथवा कृत्रिम गर्भाधान में उपयुक्त पशु नस्ल की जानकारी के अभाव में अपने पशु का प्रजनन करा देते हैं। इसके फलस्वरूप उचित गुणवत्ता की मादाएं भी कम गुणवत्ता और कम दूध देने वाले संततियों को जन्म देती है तथा आने वाली पीढ़ियों में भी लगातार दूध की मात्रा में कमी आने लगती है। इस समस्या के समाधान के लिए पशुपालकों को चयन के महत्व एवं उद्देश्य के बारे में पर्याप्त जानकारी होना चाहिए। यह आवश्यक नहीं कि वे वैज्ञानिक नीति का ही उपयोग करें, वे स्थानीय तकनीकों से भी नस्ल सुधार सकते हैं। इसके लिए किसी भी नस्ल के पशु का चयन करने से पहले यह आवश्यक है कि उस नस्ल की सम्पर्ण जानकारी प्राप्त कर ली जाये। उदाहरण स्वरूप औसत भार, प्रथम प्रसव के समय आयु, औसत दुग्ध उत्पादन, दुग्ध में वसा का प्रतिशत एवं दो प्रसवों के मध्य औसत समयातंराल आदि। यदि उस पशु के माता–पिता एवं वंशावली की भी जानकारी उपलब्ध है तो पशुपालक को उससे भी अवगत होना चाहिए। एक बार उचित गुणवत्ता की मादा का चयन हो जाये उसके पश्चात उसकी उपयोगिता अनुसार उचित गुणवत्ता वाले नर का चयन करना चाहिए। स्थानीय लोगों को नर पशु के चयन के महत्व की जानकारी के अभाव में वे पशु प्रजनन से प्राप्त होने वाली मादा संततियों से भविष्य में प्रचूर मात्रा में दुग्ध प्राप्त करने में

असमर्थ होते हैं। अतः यह आवश्यक है कि पशुपालक नर पशु के चयन के प्रति भी जागरूक बनें। आसपास के किसी एक नर से सतत रूप से प्रजनन कराने से अन्तः प्रजनन अवसाद अर्थात एक ही एक गुण की हर पीढ़ी में वृद्धि होने लगती है। उदाहरण स्वरूप एक अधिक दूध देने वाली मादा का प्रजनन कम दूध देने वाले लक्षण रखने वाले नर पशु से करा दिया जाये तो अगली पीढ़ी में औसत दूध उत्पादन कम होगा तथा उसी नर के सतत उपयोग से दुग्ध उत्पादन क्षमता में कमी आती जायेगी जिससे पशुपालकों को भारी नुकसान होगा। इसी कारण एक उचित गुणवत्ता के नर का भी चयन उतना ही महत्वपूर्ण है जितना एक मादा पशु का। अब समस्या ये है कि उचित नस्ल के नर पशु या उनके वीर्य कहां से प्राप्त किया जाये एवं उनकी गुणवत्ता की जानकारी कहां से प्राप्त की जाये। इसके लिए आवश्यक है कि किसान जिस नर पशु को प्रजनन के लिए उपयोग करें उसके माता–पिता के गुणों का पता करें तथा साथ ही उसके अन्य परिवार के पशुओं की भी जानकारी लें इससे उसे नर पशु की नस्ल के बारे में एक अनुमानित जानकारी मिल जाती है। यदि उस नर पशु के संतान की जानकारी प्राप्त हो तो यह उस नर पशु के चयन के लिए सबसे ज्यादा उपयोगी होता है किन्तु यह बहुत मुश्किल होता है कि किसी नर पशु की संतान की उचित जानकारी प्राप्त हो। इसके अलावा हम यह भी देख सकते हैं कि नस्लों का प्रजनन कराने के बाद जो संताने प्राप्त हो रही है उनमें वास्तव में उनके माता–पिता के लक्षण आ भी रहे हैं या नहीं। यदि नहीं तो हमें ऐसे पशुओं को हटा देना चाहिए आगे प्रजनन नकराना चाहिए। क्योंकि एक सफल प्रजनन नीति में यह सबसे महत्वपूर्ण है कि कम लाभकारी व कम गुणवत्ता के पशुओं को प्रजनन से हटा दिया जाये ताकि उच्च गुणवत्ता वाले पशु ही प्राप्त हो सकें एवं अगली पीढ़ियों की गुणवत्ता भी सतत रूप से बनी रहें।

डॉ. ईशमीत कुमार, डॉ. जयेश व्यास एवं डॉ. असद खान

राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा।

निदेशक की कलम से...

बकरी पालन एक लाभकारी व्यवसाय

आदिकाल से ही कृषि के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के पशुओं का पालन किया जा रहा है और इसमें बकरी व भेड़ पालन मुख्य व्यवसाय रहा है जिसका की मांस उत्पादन के लिए किया जाता रहा है। देश के बंजर, रेगीस्तानी, दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में इस पालन में कम लागत होने के कारण भेड़ व बकरियों का पालन विशेष रूप से किया जा रहा है। बकरी पालन मुख्य रूप से भूमिहीन, सीमान्त किसानों तथा घुमन्तू प्रजातियों द्वारा किया जाता रहा है। राजस्थान बकरी पालन में प्रथम स्थान पर है। भारत की समस्त बकरियों का 13.99 प्रतिशत राजस्थान में पायी जाती है तथा राजस्थान की कुल पशु सम्पदा का 36.79 प्रतिशत संख्या बकरियों की है। बकरी को भविष्य का पशु भी कहा जाता है। बकरी पालन प्रायः सभी प्रकार की जलवायु में कम लागत, साधारण आवास, सामान्य रखरखाव तथा सामान्य पोषण से किया जाने वाला व्यवसाय है। बकरी में अयोग्य खाद्य पदार्थो को उच्चकोटी के पोषक पदार्थो जैसे दूध, मांस आदि में परिवर्तित करने की अदभुत क्षमता होती है। बकरी छोटे व सीमान्त किसानों के पोषण एवं आर्थिक उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा इस व्यवसाय को बच्चों तथा महिलाओं की सहायता से आसानी से शुरू किया जा सकता है। सामान्यतया बकरी साल में दो बच्चे देती है जिससे इसकी संख्या बड़ी तेजी से बढ़ती है। अतः पशुपालक आवश्यकतानुसार इसे बेच कर आर्थिक आय अर्जन कर सकता है। यह व्यवसाय गरीब किसानों की आय बढ़ाने, रोजगार दिलाने एवं पोषक तत्वों की उपलब्धता निश्चित करने में विशेष योगदान देता है। अतः किसान एवं पशुपालक भाई वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बकरी पालन करें तो निःसंदेह कम लागत एवं कम समय में अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। साथ ही अपनी सामाजिक आर्थिक स्थिति सुधार सकते हैं। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर अपने पशु विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से किसानों एवं पशुपालकों को वैज्ञानिक बकरी पालन पर प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। अतः पशुपालक भाई इन केन्द्रों पर जाकर प्रशिक्षण के माध्यम से बकरी पालन हेतु आवश्यक तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर कम लागत में बकरी पालन व्यवसाय शुरू कर आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

"धीणे री बात्यां"

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया

संपादक

डॉ. दीपिका धूड़िया

डॉ. मनोहर सैन

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

0151-2200505

email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया